श्रुत पंचमी लघु नाटिका

विशुद्धि - अरे ! बहन सुबह सुबह कहाँ चली ?

प्रसिद्धि - बहन ! अभी स्कूल की छुट्टियाँ चल रही है, मैं तो मूवी देखने जा रही हूँ। तुम यह सजी हुई जिनवाणी लेकर कहाँ जा रही हो?

विशुद्धि -अरे ! बहन क्या तुम्हें पता नहीं आज तो श्रुत पंचमी है , मैं तो श्रुत पंचमी विधान में जा रही हूँ ।

प्रसिद्धि - ये श्रुत पंचमी क्यों मनाते है ?

विशुद्धि - ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन ही हमारी जिनवाणी माँ लिपि बद्ध हुई थी। इसी दिन षटखंडागम ग्रन्थ राज पूर्ण हुआ था। अनादी निधन नमोकर मन्त्र भी इस ग्रन्थ में पहली बार लिखा गया था। भगवान महावीर के मोक्ष जाने के ४०० - ५०० वर्ष बाद हम लोगों की स्मृति धीरे धीरे कम होती गई , इससे चिंतित होकर आचार्य धरसेन को विकल्प आया , तब उन्होंने भारत के दक्षिण से दो योग्य मुनिराज को बुलवाकर उनकी परीक्षा लेकर उन्हें जिनवानी के बारह अंगों का विस्तृत ज्ञान दिया। आज के दिन ही पुष्पदंत और भुतबली मुनिराजों ने षटखंडागम ग्रन्थ को पूर्ण किया था ।

प्रसिद्धि - अरे ! वाह मुझे तो पता ही नहीं था । मैं तो बहुत बड़ा पाप करने जा रही थी , तुमने तो मेरी आँखे खोल दी ।

विशुद्धि - इस पर्व को जैन साधर्मी बड़े ही उत्साह से मनाते है । सभी जैन मंदिरों में जिनवानी की सार संभाल की जाती है । जिनवानी को सजाने की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है ।

प्रसिद्धि - तब तो मैं भी तुम्हारे साथ मंदिर चलूंगी ।

विशुद्धि - तो फिर किस बात की देरी? चलो चले श्रुत पंचमी विधान में । जय जिनेन्द्र।

लेखक : डॉ. नितेश शाह